परमेश्वर की इच्छा और मनुष्य की स्वेच्छा

फ्रैंकलिन के नोट्स

यशायाह 55:8-11 प्रभु यह कहता है: **मेरे विचार तुम्हारे विचारों के समान नहीं हैं**, और न तुम्हारे मार्ग मेरे मार्गों के सदृश हैं। [9] पृथ्वी से जितना दूर आकाश है, **उतने ही दूर मेरे मार्ग से तुम्हारे मार्ग हैं; उतने ही तुम्हारे विचार मेरे विचारों से दूर हैं।**

- ऊपर दिए गए वचनों में "हाँ यह सही है" और " इस मैं में मैं भी शामिल हूँ" कहना उचित होगा। जब हम इन वचनों में आगे बढ़ते हैं तो हमें और भी मज़बूत कथन मिलते हैं जो हमें अपने अध्ययन में ले जाता है।

[10] 'आकाश से हिम गिरता है, और वर्षा की बूंदें टपकती हैं; वे लौटकर आकाश को नहीं जातीं, वरन् पृथ्वी पर भूमि को सींचती हैं। वे अन्न को उपजाती हैं; और बोनेवाले को बीज और खानेवाले को भोजन प्राप्त होता है। [11] ऐसे ही जो **शब्द मेरे** मुंह से निकलता है, वह मेरे पास खाली **नहीं लौटेगा**; परन्तु, **जो मेरी इच्छा है** उसे **वह पूरा करेगा**; जिसके लिए मैंने उसको भेजा था, **वह उसको सफल करेगा**।

- एक मात्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से (1तिमु 6:15)और जिसमें अदल बदल के कारण न ही कोई छाया पड़ती है। (याकूब 1:17)

यशायाह 46:8-10 इस बात को स्मरण करो, इस पर **ध्यान दो** और अपना मन लगाओ। प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से हैं, क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूं, अन्य कोई नहीं। मैं ही परमेश्वर हूं, और मेरे तुल्य कोई नहीं है। [10] **मैं अन्त की बात आदि से और जो बातें अब तक नहीं हुईं उन्हें प्राचीनकाल** से बताता आया हूं। **मैं कहता हूं कि मेरी योजना स्थिर रहेगी और मैं अपनी भली इच्छा पूरी करूंगा।**

यशायाह14:24 सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, "निस्सन्देह जैसा मैंने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा और जैसी योजना मैंने बनाई है, वैसी ही वह पूरी हो जाएगी

भजन संहिता 33:8-12 यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहती है, उसके हृदय की योजनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है

और **मनुष्य के पास** परमेश्वर की इच्छा और योजनाओं का विरोध करने की **स्वेच्छा है** जो आरम्भ से ही, अर्थात **आदम और हव्वा द्वारा आज्ञा उल्लंघन** करने और उसके बाद हर एक व्यक्ति के जीवन से पूरी तरह स्पष्ट है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया और इस पृथ्वी पर स्वेच्छा और सीमित अधिकार दिया।

उत्पत्ति 1:26-29 परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप में, अपने सदृश बनाएं, ...और **समस्त पृथ्वी पर** मनुष्य का अधिकार हो।' (भजनसंहिता 115:16)

परमेश्वर **आदम और हव्वा से प्रेम** करता था। वह उनके साथ वाटिका में प्रतिदिन चलता फिरता था, तथा उसके उनके साथ **घनिष्ठता का सम्बन्ध था।** परमेश्वर ने उन्हीं की भलाई के लिए उन्हें बताया कि उनके लिए क्या करना अच्छा है और क्या नहीं। **वे परमेश्वर की इच्छा जानते थे।**

परन्तु **उनकी इच्छा पर नियंत्रण** पाने के लिए एक **युद्ध** हुआ और **उन्होंने निर्णय लिया** कि वे शैतान के झूठ पर **विश्वास** करेंगे। सारी मानवता ने आदम के निर्णय का परिणाम भुगता। 2तीमुथियुस 2:26 और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएँ।

आदम और हव्वा ने अपनी **"स्वेच्छा का** उपयोग करके परमेश्वर के **विरुद्ध विद्रोह** किया और पृथ्वी पर **प्राप्त अपना अधिकार शैतान** को दे दिया।

- तीन बार यीशु उसे संसार का शासक (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11) कहकर पुकारता है।
- 1 यूहन्ना 5:19 हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।

लेकिन परमेश्वर ने उनके लिए अपनी योजना का त्याग नहीं किया।

वह आपके प्रति अपनी योजना को भी नहीं त्यागेगा।

- यशायाह 46:8-10 मैं ही परमेश्वर हूं, .. [10] **मैं आदिकाल से ही अन्त की बातें बताता आया हूं,...मेरी योजना स्थिर रहेगी** और **मैं अपनी भली इच्छा पूरी करूंगा।**

उत्पत्ति 3:21 और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के वस्त्र बनाकर (जिसमें बलिदान हुआ और लहू बहाया गया) उनको पहना दिए।

बाद में जो परमेश्वर का मेमना करनेवाला था, यह उसकी एक तस्वीर थी - उनके पाप तथा आदम से उत्पन्न होने वाले सभी के पाप ढांपना।

यह परमेश्वर की इच्छा थी और अंतत: इसे पूरा होना था।

परन्तु - मनुष्य परमेश्वर की इच्छा को न मानकर अपने जीवन में दासत्व और बड़ी परेशानियाँ ले आया। **और हम भी ऐसा ही करते हैं।**

आदम को स्वेच्छा के साथ सृजा था। परन्तु जब उसने पाप किया तो **वह दासत्व में आ गया** : तुम उसी के दास हो, जिस की मानते हो (रोमियों 6:16)

आदम के वंशज होने के नाते **हम सभी का जन्म दासत्व**, पाप के बन्धनों में हुआ।

इफिसियों 2:1-9 उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, [2]जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। [3] इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। [4] परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया,[5]जबकि हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे

- यशायाह 46:10 **मैं अन्त की बात आदि से और जो बातें अब तक नहीं हुईं उन्हें प्राचीनकाल से बताता आया हूं।** मैं कहता हूं कि मेरी योजना स्थिर रहेगी और **मैं अपनी भली इच्छा पूरी करूंगा।**

- परमेश्वर ही है जिसने **अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।** फिलिप्पियों 2:13 ....

उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया -अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है - [6]और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया, [7]कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।[8]क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है,[9]और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

और जब हमारा **नया जन्म** होता है, **तो हमारी इच्छा** पाप के दासत्व से **आज़ाद हो जाती है,** ताकि वह उसे **चुन** सके जिसकी हमें **सेवा** करनी है और **आज्ञा** माननी है।
सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे। (यूहन्ना 8:36)

परन्तु शैतान **हार नहीं मानता** और जैसे **परमेश्वर ने अपनी सुइच्छा** निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है, वैसे ही शैतान भी **अपनी** इच्छा के निमित्त तुम्हें अपने **कार्य** और इच्छा की ओर आकर्षित करता है।

- क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। (इफिसियों 6:12)

यह मनुष्य की इच्छा और मन को नियंत्रित करने के लिए प्रत्येक दिन का युद्ध है।

यहोशु ने परमेश्वर के लोगों से कहा (24:15) **आज** चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे ... यह प्रतिदिन लेने वाला निर्णय है।

हमें यहोशु के साथ खड़े होकर कहना चाहिए :

परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूंगा।

धार्मिकता या नैतिकता यह है कि आप वो करते हैं जो आपको करना चाहिए ... न कि जिसे आप करने के लिए स्वतन्त्र हैं। आदम से सीखें। उसकी स्वेच्छा उसे दासत्व में ले गई। और इसी तरह आपकी भी ले जाएगी।

यीशु अपने लोगों को छुड़ाने आया और पृथ्वी का अधिकार वापस प्राप्त करने तथा उसे वापस अपनी कलीसिया अर्थात "अपने बुलाए हुओं" को देने आया।

"स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।[19] इसलिये जाओ(मत्ती 28:18-19) ... जब हम उसकी आज्ञा मानते हैं तो हम उसके अधिकार के आधीन आ जाते हैं तथा हमें उसका अधिकार दिया जाता है। देखो, **मैंने तुम्हें ... शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है**, अतः कोई तुम्हें हानि नहीं पहुँचाएगा। (लूका 10:19)

- ध्यान रखें - आपको तभी अधिकार दिया जाता है जब आप अधिकार के अधीन होते हैं।
- रोमी सूबेदार: मत्ती 8:9 क्योंकि मैं भी शासन के अधीन हूं, और मेरे अधीन सिपाही हैं। जब मैं एक से कहता हूं, 'जा!' तो वह जाता है, और ....

इसीलिए हमसे कहा गया है :

"तुम इस प्रकार **प्रार्थना** करना: 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए (आदरणीय, भक्तियोग्य)। [10] **तेरा राज्य आए** (उसका राज्य वहां है, जहाँ उसकी आज्ञा का पालन किया जाता है)। **तेरी इच्छा** जैसे स्वर्ग में **पूरी होती है** वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो। मत्ती 6:9-10

- हम इसे पढ़ सकते हैं या बोल सकते हैं, लेकिन यह तब तक प्रार्थना नहीं है जब तक हम ईमानदार नहीं हैं।
- यह हमें "अधिकार के अधीन" रखता है और इस प्रकार हमें अधिकार देता है।

इससे हमें यह संकेत मिलता है कि इस पृथ्वी पर जो कुछ होता है उसके लिए सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर ने अपने नियुक्त राजदूतों अर्थात अपनी कलीसिया - आपके और मेरे द्वारा - काम करना चुना है।

यीशु हमारा आदर्श है :

यूहन्ना 6:38 क्योंकि **मैं अपनी इच्छा नहीं** वरन् अपने भेजनेवाले की **इच्छा** पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ।

यीशु परमेश्वर की इच्छा को ऐसे जानने आया :

यूहन्ना 5:19 इस पर यीशु ने उनसे कहा, **"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता**, केवल वह जो पिता को करते **देखता** है**; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है** उन्हें **पुत्र भी उसी रीति से करता है।** स्वप्न और दर्शन देखता है

और प्रार्थना / बातचीत करने / सुनने के द्वारा

युहन्ना 5:30 "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता**; जैसा सुनता हूँ,** वैसा न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि **मैं अपनी इच्छा नहीं** परन्तु **अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।**

- **मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता।** **पूर्णतः समर्पण**

  और न ही हम : मैं दाखलता हूं,तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल लाता है, **क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।** (यूहन्ना 15:5) कुछ भी ऐसा नहीं कर सकते जो पिता को भाता है। राज्य के महत्व के अनुसार कुछ भी नहीं।

- **जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ;** जब तक आप सुनेंगे नहीं .... न्याय नहीं होगा।
  भजन संहिता 5:3 हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरे पुकारने पर ध्यान दे, क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूं।
  हबक्कूक2:1-2 मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूंगा, और गुम्मट पर चढ़कर ठहरा रहूंगा, और ताकता रहूंगा कि मुझ से वह क्या कहेगा? और मैं अपने दिए हुए उलाहने के विषय में उत्तर दूं?यहोवा ने मुझ से कहा ...

- **मैं अपनी इच्छा नहीं** ...चाहता
  यही मुख्य विषय और हमारी सबसे बड़ी समस्या है।
  हम कितनी बार ऐसा कह पाते हैं? यह हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

- परन्तु **अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।**
  यह यीशु को (और हमें) अधिकार के अधीन रखता है -उसको अधिकार दे कर

हमारी **स्वेच्छा** ही हमारी समस्या है
क्योंकि हम अभी भी पापी स्वभाव में हैं

और यहाँ पर **फिलिप्पियों 2:13** हमें यह समझने में सहायता करती है कि किस प्रकार परमेश्वर मनुष्य की स्वेच्छा का आदर करता और उसके साथ काम करता है।

फिलिप्पियों 2:12-13 इसलिये हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुम सदा आज्ञा मानते आए हो, वैसा ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और काँपते हुए अपने अपने **उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ**; [13]क्योंकि परमेश्वर ही है **जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम,** दोनों **बातों के करने का प्रभाव डाला है।**

- **उद्धार का कार्य पूरा करना:**
  यह इस बात को स्वीकारता है कि **मनुष्य स्वतंत्र है** और इसलिए यह हमारी **जिम्मेवारी है** कि हम "उद्धार का कार्य पूरा करें"। परमेश्वर यह हमारे लिए नहीं करता।

  पौलुस यहाँ पर **विश्वासियों** से बातचीत कर रहा है, इसलिए यह अनंत जीवन के उद्धार की बात **नहीं है** जिसे हमें "पूरा करना है। उसका निश्चय तो हमें यीशु मसीह के किए **पूर्ण** कार्य पर भरोसा और विश्वास करने के द्वारा प्राप्त हुआ, न कि अपने किसी कार्य के द्वारा।

  तीतुस 3:5 उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए

  2 तीमुथियुस 1:9 जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है; जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है

जिस उद्धार के कार्य को हमें पूरा करना है, वह **दिन प्रतिदिन का उद्धार** है अर्थात **संसार, शरीर** और **शैतान** पर **विजय** प्राप्त करना।

नए नियम में उद्धार के तीन चरण हैं :

1. हम बचाए जा चुके है : भूत काल, पूर्ण कार्य, यीशु मसीह और उसके बहाए गए लहू पर विश्वास करने के द्वारा पाप के दंड से बचाए जाने का कार्य।

2. हम बचाए जा रहे हैं : जब हम परमेश्वर की आज्ञा मानते और अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चलते हैं तो हम हर दिन पाप की शक्ति से बचाए जाते हैं।(लूका 9:23; 1 कुरिन्थियों 1:18)

3. हम भविष्य में, या तो मृत्यु या प्रभु के आगमन के द्वारा पाप की उपस्थिति से बचाए जाएँगे।

यहाँ कुछ उपाय हैं जिसके द्वारा हम "अपने उद्धार का कार्य" पूरा कर सकते हैं।

इफिसियों 4:1 जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो,(15) प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, **(17)** जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। (22-24) कि तुम पिछले चाल चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो और नये मनुष्यत्व को पहन लो (6:11) परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो .... (14-18) इसलिये सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिन कर, और पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन कर;और इन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार, ...हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो" और तुम (3:17) प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर [18] सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है, [19] और **मसीह के उस प्रेम को जान सको** जो ज्ञान से परे है कि **तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।**

- और हमें यह "डरते और काँपते हुए" करना है:

  सोचिए कि **यदि हम** "अपने उद्धार का कार्य" **पूरा नहीं करेंगे**, तो **हमारा शत्रु** - यह **संसार, शरीर** और वह **शैतान** - हम पर जय पा लेगा, और **आपकी ज्योति** धीमे पड़ जाएगी तथा आपका जीवन प्रभावहीन और समस्याओं से भर जाएगा। और फिर ज़रा उस **लेखे** पर विचार करें जो आपको उसके आत्मा को शोकित करने और उसकी महिमा को इस पृथ्वी पर प्रकट न करने के लिए देना होगा। (2 कुरि 5:20)

- क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने यह करने का प्रभाव डाला है :

वह आप में कार्यरत है। वह हर एक विश्वासी में काम कर रहा है। आपके जीवन के लिए उसके पास एक अद्भुत योजना है। आप में होकर **"पवित्र आत्मा" अपने उद्देश्य को पूरा करने हेतु कार्य करता है** - ताकि आप पवित्रता का जीवन जीएं/ उसके वचन बोलें/ और बड़े बड़े काम करें और आशीष पाएं, तथा आपके द्वारा दूसरे भी आशीष पाएं।

- इच्छा और काम दोनों:

  इसके द्वारा पता चलता है (1) **परमेश्वर की इच्छा जानना**, और **यह जानना** कि आपको क्या करना है, और फिर (2) वह **आपको** उसे करने का **सामर्थ्य** अर्थात पवित्र आत्मा देता है। अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा पर **समर्पित करने के लिए आपको प्रोत्साहित करना और अगुवाई करना।**

  परन्तु अपनी इच्छा को **नियंत्रित** करना, उसे करने का **निर्णय** लेना, और फिर विश्वास के **कदम** को **क्रियाशील** बनाना, **यह सब आप से आता है।** परमेश्वर **आपको अपनी इच्छा** चुनने के लिए प्रोत्साहित करता है, और आपको वह सब **करने की सामर्थ्य** देता है जो वह चाहता है, और उस समय हमें परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा **कार्य करना चाहिए।**

  समस्या यह है : मनुष्य के पास अपना निर्णय लेने की **स्वतंत्र इच्छा है।** और अकसर हमारे निर्णय हमारी **अपनी देह की इच्छा** से प्रेरित होते हैं या फिर हमारे बहुत सीमित और भ्रष्ट दिमाग से।

जब तक परमेश्वर हम में काम नहीं करेगा, हम उसकी इच्छा न तो जान सकते हैं और न ही उसे पूरी कर सकते हैं। कम से कम सही कारणों के लिए तो नहीं।

कार्य की सामर्थ्य के बिना, मनुष्य ऐसा **कुछ नहीं कर सकता** जो राज्य के लिए फलदायी हो : यूहन्ना 15:5 मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, **क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।**

जैसा यीशु ने कहा : "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की **इच्छा** के अनुसार चलूँ **और उसका काम पूरा करूँ** (यूहन्ना4:34)।हमें उस स्थान पर पहुंचना है, जहाँ से हम ईमानदारी से यही कह सकें। **मेरे जीवन का लक्ष्य यह है कि मैं परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ।**

फिलिप्पियों 2:13 क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, **दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।**

यीशु ने कहा : मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ **जिससे वह प्रसन्न होता है।"** यूहन्ना 8:29

हमारे पिता को ऐसा परिवार चाहिए जो **उसके महान प्रेम का प्रतिउत्तर दे** और उसको **भावता हुआ** जीवन जीने की प्राथमिकता रखे।

और ऐसा होने के लिए हमें उसके महान प्रेम के द्वारा **जकड़ा जाना** और **बाध्य** होना होगा।

2 कुरिन्थियों 5:14 क्योंकि **मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है**; इसलिये कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए। **और** वह इस निमित्त सब के लिये मरा कि जो जीवित हैं, वे **आगे को अपने लिये न जीएँ** परन्तु **उसके लिये** जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।

> और यह कभी भी मनुष्य की पापी, गिरी हुई और पथभ्रष्ट अवस्था में हो पाना संभव नहीं है, यदि परमेश्वर ... **अपनी सुइच्छा** निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम दोनों बातों के करने का प्रभाव न डाले।
>
> हमें पवित्र आत्मा की भीतरी आवाज़ को सुनकर "**अपने उद्धार के कार्य** को पूरा करते जाना है"।

कुलुस्सियों 1:10 ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के **योग्य** हो, और **वह सब प्रकार से प्रसन्न हो,** और तुम में हर प्रकार के **भले कामों** का फल लगे, और तुम परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ

परन्तु यह आसान नहीं है :

यीशु ने अपनी इच्छा और परमेश्वर की इच्छा के बीच में बड़े तनाव और संघर्ष को अनुभव किया :

लूका 22:44 वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लहू की बड़ी बड़ी बूँदों के समान भूमि पर गिर रहा था।

मत्ती 26:38 "मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।" [39] फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुँह के बल गिरा, और यह प्रार्थना की, "हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।" [40] फिर उसने चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया और पतरस से कहा, "क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? [41] जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।" (गलातियों 5:16-17) [42] फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की, "हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।" समर्पण !

यह एक **अच्छा उदाहरण** है कि हम कैसे अपनी **इच्छा को नियंत्रित करने की लड़ाई को लड़ें** और "परमेश्वर की इच्छा" का अनुसरण करें जिस प्रकार वह हममें काम करते हुए हमें प्रेरित और प्रोत्साहित करता है। **यीशु ने इस लड़ाई पर वेदना भरी प्रार्थना के द्वारा जीत प्राप्त की**।

अत: इसमें कोई अचंभा नहीं कि यीशु ने कहा : 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र (आदरणीय, भक्तियोग्य) माना जाए। तेरा राज्य आए (उसका राज्य वहां है, जहाँ उसकी आज्ञा का पालन किया जाता है)। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो। मत्ती 6:9-10

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि अपने दिन की शुरुवात **प्रार्थना** से करना ही आपकी **विजय का आरम्भ** है (मरकुस 1:35) अपनी इच्छा को उसके प्रति **समर्पित** करना और **प्रार्थना करना** - उसके साथ पूरे दिन संपर्क में बने रहना ...

"मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी इच्छा, प्रभु। तेरी इच्छा पूरी हो।"

यहाँ आपकी इच्छा क्या है? आप क्या चाहते हैं कि मैं करूं?

अपनी **इच्छा का समर्पण करना** बहुत आसान हो जाता है, जब मैं याद करता हूँ :

1. प्रभु, तू भला है (भजन संहिता 86:5), और जो कुछ भी वह करता है, भला है।

2. परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है और मेरे जीवन के लिए उसके पास एक बहुत अच्छी योजना है : यिर्मयाह 29:11 'यहोवा कहता है कि मैं उन योजनाओं को जानता हूं जिन्हें मैंने तुम्हारे लिए बनाई हैं ऐसी योजनाएं जो हानि की नहीं परन्तु तुम्हारे कुशल की हैं, कि तुम्हें उज्जवल भविष्य और आशा दूं।

   रोमियों 8:28 हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

3. यूहन्ना 10:10 चोर केवल चोरी करने, मार डालने, और नाश करने को आता है।

यह जानते हुए, यदि हम अपने आपको ऊंचा करने और अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना के ऊपर अपनी योजना को रखने का प्रयास करते हैं तो यह **मूर्खता** होगी। परन्तु हम मूर्ख ही हैं;

विशेषकर जब हम इस बात पर विचार करते हैं ..... कि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; गलातियों 6:7-8

हमारे निर्णयों के परिणाम होते हैं

इसके अलावा, यीशु की प्रार्थना निरंतर मेरी प्रार्थना होनी चाहिए:

हे पिता, मेरी इच्छा नहीं - तेरी इच्छा पूरी हो - तेरा राज्य आए।

और अब क्योंकि **परमेश्वर** अपनी इच्छा के **सामर्थ्य आपमें होकर पूरी करता है**, और उसे करने की इच्छा हमारा कर्तव्य, **हमारी जिम्मेवारी** हो जाती है, जिससे हम **निर्णय लें** अपने **उद्धार के कार्य को पूरा करने** का काम करें। अपनी इच्छा और कार्य को **प्रयोग करने** और **नियंत्रित करने** का सामर्थ्य हमारा है। अपनी इच्छा और कार्य की **जिम्मेवारी** हमारी है।

> क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं 1 कुरिन्थियों 3:9
>
> **वह अपना कार्य करता है**, और फिर **हमें भी** उसके प्रतिउत्तर में **अपना कार्य करना चाहिए**।

यीशु के शिष्य उसके साथ थे, उसके पीछे पीछे चलते थे, उसकी सुनते थे, उसकी बातों को सीखते थे, और वे **"परमेश्वर की इच्छा"** जानते थे क्योंकि, उन्हें यीशु ने बताया था। वह हमें भी प्रार्थना (जब हम उससे बातचीत करते हैं) और अपने वचन के द्वारा बताता है:

मरकुस 16:15-20 "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। विश्वास करनेवालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।"

उन्होंने यह आज्ञा मानी, और अगले पद में लिखा है :

और उन्होंने **निकलकर** हर जगह प्रचार किया, और **प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और चिह्नों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। मरकुस 16:20**

- प्रभु ने अपनी सुइच्छा निमित्त उनके मन में इच्छा और काम, दोनों बातों को करने का प्रभाव डाला, और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया - अपना कार्य किया और - प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और चिह्नों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा - उसने वही किया जो वह कर सकता था।

- **"अपने उद्धार का कार्य पूरा करने"** का **पहला कदम** "**विश्वास करना**" है। विश्वास को - प्रभु आपके मन में अपनी इच्छा पूरी करने के लिए डालता है। (2 पतरस 1:1)

- **दूसरा** और बाद के कदमों के सार इस तरह से बताया जा सकता है :
  लूका 9:23 तब उसने सब लोगों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है तो वह स्वयं अपना इनकार करे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए और मेरा अनुसरण करे।

अपने क्रूस को उठाने का अर्थ : **अपनी इच्छाओं के लिए मरना** और **परमेश्वर की इच्छा के लिए "हाँ"** करना।

रोमियों 12:1-2 इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। [2] इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

- उसकी इच्छा को जानने का अर्थ - अपने मनों को फिर से नया करना है।

1 कुरिन्थियों 2:14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।

यशायाह 55:8-9 प्रभु यह कहता है: **मेरे विचार तुम्हारे विचारों के समान नहीं हैं**, और न तुम्हारे मार्ग मेरे मार्गों के सदृश हैं। [9] पृथ्वी से जितना दूर आकाश है, उतने ही दूर मेरे मार्ग से तुम्हारे मार्ग हैं; **उतने ही तुम्हारे विचार मेरे विचारों से दूर हैं**।

उसकी इच्छा को जानने के लिए हमें वैसा करना चाहिए जैसा उसके शिष्यों ने किया था, हमें उसके साथ नजदीकी से और घनिष्ठता में, उसकी इच्छा को सुनते और जानते तथा उसकी आज्ञा को मानकर उसे पूरा करते हुए चलना चाहिए और **प्रभु उनके साथ काम करता रहा**, और चिह्नों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा।

क्यों ?

फिलिप्पियों 2:15 अपनी सुइच्छा निमित्त ... जिस से तुम निर्दोष और भोले बनो तथा इस कुटिल और भ्रष्ट पीढ़ी के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बनकर संसार में ज्योति बनकर चमको।

जैसा यीशु ने कहा : मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि **मैं सर्वदा** वही काम करता हूँ **जिससे वह प्रसन्न होता है।**" (यूहन्ना 8:29)

यीशु की बुलाहट : साराह यंग के द्वारा - **नवंबर 6**

बाकी सब वस्तुओं की अपेक्षा मुझे प्रसन्न करने का प्रयास करो। जब तुम आज की यात्रा करोगे, तो राह में बहुत से विकल्प पाओगे। दिन में बहुत से निर्णय छोटे छोटे होंगे जो आपको जल्दी लेने पड़ेंगे। आपको अच्छा चुनाव करने के लिए कुछ नियमों का पालन करना होगा। बहुत से लोगों के निर्णय, उनकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया और स्वयं या दूसरों को प्रसन्न करने की इच्छा का मिश्रण के कारण होते है। तुम्हारे लिए मेरी यह योजना नहीं है। न सिर्फ महत्वपूर्ण बातों में बल्कि हर एक बात में मुझे प्रसन्न करने का प्रयास करो। यह केवल तभी संभव हो सकता है जब आप मेरे साथ नज़दीक सहभागिता रखते हैं। जब मेरी उपस्थिति में आपकी अत्यंत प्रसन्नता होगी, तो आप स्वयं अपने मन में जान जाएँगे कि किन बातों से मुझे प्रसन्नता होती है। सही चुनाव के लिए केवल मेरी ओर देखना ही पर्याप्त होगा। अपने आपको मुझ में मग्न रख; जो भी तुम करो उससे मुझे प्रसन्न करने का प्रयास करो।

यूहन्ना 8:29 जिसने मुझे भेजा वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है, क्योंकि मैं सदा वे ही कार्य करता हूँ जिस से वह प्रसन्न होता है।"

इब्रानियों 11:5-6 विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहले उसकी यह गवाही दी गई थी कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।

भजन संहिता 37:4 यहोवा में मग्न रह, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।

इस बात को समझने के लिए यहाँ एक उदाहरण है

1 शमूएल 14:6-11 तब योनातान ने अपने हथियार ढोने वाले जवान से कहा, "आ, हम पार जाकर इन ख़तनारहित लोगों की चौकी तक पहुँच जाएं। सम्भव है यहोवा हमारे लिए कार्य करे क्योंकि यहोवा के लिए कोई रुकावट नहीं कि बहुत लोगों अथवा कम लोगों के द्वारा हमें बचाए।" 7 उसके हथियार ढोने वाले ने उस से कहा, "जो कुछ तेरे हृदय में है वही कर। तू आगे बढ, और मैं तेरी इच्छा के अनुसार तेरे साथ हूँ।" 8 तब योनातान ने कहा, "सुन, हम उस पार जाकर उन मनुष्यों के सामने अपने को प्रकट करें। 9 यदि वे हम से कहें, 'हमारे आने तक ठहरो' तो हम अपनी जगह पर खड़े रहेंगे और उनके पास नहीं जाएंगे। 10 परन्तु यदि वे कहें, 'हमारे पास चढ़ आओ,' तो हम चढ़ जाएंगे क्योंकि यहोवा ने उनको हमारे हाथ कर दिया है। यही हमारे लिए चिह्न होगा।"

- यहाँ एक व्यक्ति है जो परमेश्वर पर बहुत भरोसा रखता और उस पर निर्भर है। वह जानता था कि उसके लिए क्या सही है, क्या धर्मी है, वह परमेश्वर के वायदे और योजना के बारे में जानता था, और उसके लिए लड़ने को भी तैयार था।

- यह पिता के हृदय को जानना अर्थात "**पुत्रत्व**" है। एक **बच्चा** एक दास के समान है - जो अपने पिता के हृदय की इच्छा को नहीं जानता।

  गलातियों 4:1 मैं यह कहता हूं कि उत्तराधिकारी जब तक नाबालिग़ है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, फिर भी उसमें और दास में कोई अन्तर नहीं रहता,

  1 कुरि. 3:1-4 .... जो मसीह में बालक हैं, मैं ने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया ...

  1 कुरि. 13:11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं।

- सम्भव है यहोवा हमारे लिए कार्य करे - हमारी योजनाएँ परमेश्वर की इच्छा में हो भी सकती हैं या नहीं भी हो सकती हैं। परन्तु हमें यह जानने की ज़रूरत है कि हमें यह ढूँढना है। योनातान के समान हमें परमेश्वर की इच्छा पता लगाने के लिए "विश्वास के कदम" उठाने को हमेशा तैयार और इच्छुक रहना चाहिए।

- उसके हथियार ढोने वाले ने उस से कहा, "जो कुछ तेरे हृदय में है वही कर - अपनी बुद्धि से नहीं। वह जानता था कि परमेश्वर ही उन सब के हृदयों को गढ़ता है (भजन संहिता 33:15)। अपनी बुद्धि के बजाय अपने हृदय के अनुसार चलना बेहतर है।

  जब हमारा नया जन्म होता है तो परमेश्वर हमारे "पत्थर के हृदय" के स्थान पर हमें एक नया हृदय और नया आत्मा देता है (यहेजकेल 36:26)

- अपने हृदय का अनुसरण करते हुए योनातान ने परिणाम जांचने के लिए योजना तैयार की। चाहे जो भी हो, हर हाल में इसमें जोखिम था और लड़ाई की संभावना थी। यदि वे कहते "हम तुम्हारे पास नीचे आ रहे हैं" तो फिर किसी परिणाम का आश्वासन नहीं था।

- परन्तु "जो कुछ अपने हृदय में है" का अर्थ, प्रभु की प्रतिज्ञाओं को जानना और उसके लिए जोखिम को भी उठाना है, एक बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई है।

एक उदाहरण है जहाँ नजदीकी मित्र, यहाँ तक कि परमेश्वर के नबी भी गलत थे।

1 इतिहास 17:1-4 जब **दाऊद** अपने भवन में रहने लगा, तो ऐसा हुआ कि उसने **नातान** नबी से कहा, "देख, मैं तो देवदार के बने घर में रहता हूं, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक तम्बू में है।" [2] तब नातान ने दाऊद से कहा, "**जो कुछ तेरे मन में है उसे कर, क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है।**" [3] और उसी रात ऐसा हुआ कि परमेश्वर का यह वचन नातान के पास पहुंचा, 4 "जाकर मेरे दास दाऊद से कह, कि यहोवा यों कहता है : तू मेरे रहने के लिए घर न बनवाना

- प्रभु के लिए दाऊद को लग्न थी, वह परमेश्वर की इच्छा जानता था, क्या किया जाना चाहिए। वह "**पुत्र**" था, परन्तु **वह उन्हें पूरा करने वाला व्यक्ति नहीं था**।

- हो सकता है कि हम परमेश्वर की इच्छा जानते हों, पर हमें यह भी जानना चाहिए कि क्या हम उस इच्छा पूरा करने वाले व्यक्ति हैं।

- हमें उसके सेवक होने, सुसमाचार प्रचार करने, ज्योति के समान जग में चमकने, बीमारों के लिए प्रार्थना करने और उसके गवाह होने के लिए बुलाया गया है। परन्तु **कुछ विशेष कार्य** हैं जिसके लिए परमेश्वर ने **विशेष लोगों** को चुना है (मूसा, यहोशु, शाऊल, दाऊद, सुलैमान, और अन्य)।

दाऊद के चारों ओर ऐसे भी लोग थे जो कहते थे: तुम वो नहीं कर सकते जो तुम्हारे हृदय में है। उसके भाई/ राजा शाऊल : "तुम इस लायक नहीं हो ... तू तो अभी लड़कपन में ही है"/ विशाल गोलियात ने कहा: *"क्या मैं कुत्ता हूँ, कि तू मेरे पास लाठी लेकर आया है?"*

हम अकसर **अपने ही सबसे बड़े शत्रु बन जाते हैं** और यह सोचकर स्वयं को अयोग्य मान लेते हैं, कि मेरे में कोई गुण नहीं है, और न ही मुझ में कोई योग्यता है, या जिन्हें मैं जानता हूँ या जिनके बारे में पढ़ता हूँ, मैं उनके समान विशेष नहीं हूँ। मैं दाऊद, दानिएल, बिल्ली ग्राहम या रैंडी क्लार्क नहीं हूँ। लेकिन हमें याद रखना चाहिए, परमेश्वर अकसर मूर्खों को चुनता है कि ज्ञानवानों को लज्जित करें।

1 कुरि 1:27 परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे;

- मैं चुने जाने के योग्य था और असल में मैं सोचता हूँ कि हम सभी इस योग्य बन जाते हैं।

- जैसा मूसा के साथ हुआ : किसी भी विजय की झाड़ी चलेगी। और जैसा रैंडी क्लार्क कहता है : परमेश्वर एक छोटी सी जीत को भी इस्तेमाल कर सकता है।

गिदोन का एक अच्छा उदाहरण (न्यायी 6-9)

गिदोन ने उससे कहा, स्वामी, मैं कैसे इस्राएलियों को मुक्त कर सकता हूं? मेरा वंश मनश्शे गोत्र में सबसे दुर्बल है। मैं अपने परिवार में सबसे छोटा हूँ।

- गिदोन न तो अपने आपको और न ही किसी और को कुछ विशेष समझता था। इस कार्य के लिए योग्य ठहराने को उसके पास कुछ नहीं था।

16 प्रभु ने उससे कहा, मैं तेरे साथ रहूंगा, और तू मिद्यानियों को इस प्रकार मार डालेगा मानो वे केवल एक मनुष्य हों।

हमें प्रभु के उत्तर को हमेशा स्मरण रखना चाहिए: मैं तेरे साथ रहूंगा (इब्रानियों 13:5) और जिसे वह बुलाता है, उसे योग्य ठहराता और तैयार करता है (कुलुस्सियों 1:12; 2 तिमु 1:9)। **वह योग्यों को नहीं बुलाता / वह बुलाए हुओं को योग्य बनाता है।**

फिर भी गिदोन को यकीन नहीं था और उसने परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि करने के लिए चिह्न माँगा।

17 गिदोन ने उससे कहा, यदि तेरी कृपादृष्टि मुझ पर हो तो मुझे कोई चिह्न दिखा जिससे यह प्रकट हो कि तू ही मुझ से वार्तालाप कर रहा है।

- हमें भी यह जानने और पुष्टि करने की ज़रूरत है कि जो आवाज़ हम सुन रहे हैं वह प्रभु ही की है न कि हमारी या किसी और की।

- गिदोन ने चिह्न माँगा और योनातन ने परिस्थिति तैयार की।

21 तब प्रभु के दूत ने अपने हाथ की लाठी को ... बढ़ाया, और ... उसी क्षण चट्टान से आग निकली, और उसने मांस तथा अखमीरी रोटी को भस्म कर दिया। प्रभु का दूत भी गिदोन की दृष्टि से ओझल हो गया।

- यह दर्शाता है कि **परमेश्वर पुष्टि करेगा** और अपनी इच्छा को हम पर प्रकट करेगा तथा उसे गुप्त में या किसी भ्रम में नहीं रखेगा।

- निरंतर प्रार्थना करने और **वचन पर मनन** करने के द्वारा हम परमेश्वर की इच्छा और उसका मन जान सकते हैं, और इस तरह हमारे **"विश्वास के कदम"** **"उसके पद चिह्नों में"** और अधिक हो जाएँगे।

जिस प्रकार दानिएल ने कहा : दानिएल 11:32

जो लोग अपने परमेश्वर को जानते हैं, वे सामर्थ्य के कार्य करेंगे।

"जो लोग अपने परमेश्वर को जानते हैं" का अर्थ "परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का सम्बन्ध" रखना है। यह शब्द जानना वही है जो उत्पत्ति 4:1 में है जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उस ने गर्भवती होकर ...। इस तरह का जानना जीवन लाता है।

आप जब **परमेश्वर को यत्न से ढूंढोगे** तो उसे "जान" पाओगे।

यिर्मयाह 29:13 तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे क्योंकि **सम्पूर्ण हृदय** से मुझे ढूंढ़ोगे - समय निकालकर उसके वचनों को पढ़ने, उससे बातचीत करने, उसकी आराधना करने के द्वारा। तो आपको पता चलेगा कि उसकी इच्छा क्या है, उसका हृदय कैसा है और वह कैसे सोचता है।

- वे सामर्थ्य के कार्य करेंगे। खाली नहीं बैठना पर कार्य करना, जोखिम उठाना और यह सिद्ध करना कि परमेश्वर की इच्छा क्या है।

रोमियों 12:2 इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम **परमेश्वर की** भली, और भावती, और **सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो**।

इब्रानियों 13:20-21 अब शान्तिदाता परमेश्वर ... [21] तुम्हें हर एक भली बात में **सिद्ध करे**, जिससे तुम **उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसको भाता है** उसे यीशु मसीह के द्वारा **हम में उत्पन्न करे।** उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

फिलिप्पियों 1:6 मुझे इस बात का भरोसा है कि **जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे** यीशु मसीह के दिन तक **पूरा करेगा।**

1 थिस्सलुनीकियों 5:24 तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।

यशायाह 14:24 सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, "निस्सन्देह **जैसा मैंने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा और जैसी योजना मैंने बनाई है, वैसी ही वह पूरी हो जाएगी**

भजन संहिता 33:8-12 **यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहती है,** उसके हृदय की योजनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती हैं।

हाँ और आमीन!

ठीक वैसा जैसा उसने सोचा था, हो जाएगा

ऊपर दिए गए पदों में जो एक दूसरा सबसे महत्वपूर्ण और विवादित विषय है वह यह है :

आदम, हव्वा और परमेश्वर की सभी संतान, स्वर्ग में अनंत जीवन जीएंगे क्योंकि - यह परमेश्वर की इच्छा है।

परमेश्वर की सभी संतान, और पृथ्वी को पुन:स्थापित किया जाएगा ...क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है।

इफिसियों 1:4-5 जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें **चुन लिया** कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और **अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार** हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों

- इफिसियों की पत्री उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम लिखी गई जो इफिसुस में थे (इफिसियों 1:1)। इसलिए पद 4 में "हमें" का तात्पर्य उन्हीं विश्वासियों से है, जिन्हें पौलुस लिख रहा है।

- "हमें" का स्पष्ट अर्थ विश्वासी हैं, क्योंकि पृथ्वी के सब लोगों को उसने स्वर्गीय अनंत जीवन के लिए "पहले से ही नहीं चुना"। बहुत से ऐसे हैं जो नरक की अनंत अग्नि में जाएँगे। (मत्ती 23:15, 33; 2 पतरस 2:4-10)

- उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया में "**हमें**" **यदि** हर एक जन है, तो यीशु कैसे कह सकता है : मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ? मत्ती 7:22-23

- "उसने हमें ... चुन लिया" **सीमित** है क्योंकि उसकी इच्छा, उसकी लालसा, उसका उद्देश्य **पूरा किया जाएगा**। उसकी संतान उसके साथ अनंतकाल तक साथ रहेंगे।

हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें **चुन लिए** जाने के बारे में **हम से** बातचीत करने के बाद वह आगे इफिसियों 1:11 में कहता है उसी में जो अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार सब कुछ करता है, हमने भी उसके अभिप्राय के अनुसार, पहिले से ठहराए जाकर, उत्तराधिकार प्राप्त किया है,

इसलिए : **मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे** यीशु मसीह के दिन तक **पूरा करेगा।** फिलिप्पियों 1:6

हमारी मंजिल अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, और पुनुरुत्थान द्वारा स्पष्ट रीति से निर्धारित है।

परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8) और प्रेम कभी टलता नहीं (1 कुरि. 13:8)

हमें परमेश्वर के प्रेम से जो प्रभु यीशु मसीह में है, कुछ भी अलग नहीं कर सकेगी। (रोमियों 8:38)

जो परमेश्वर ने आदम (अनंत जीवन) के साथ और पृथ्वी के लिए अपनी वास्तविक योजना के साथ आरम्भ किया था वह अवश्य पूरी होगी।

यशायाह 65:17 "क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी को सृजता हूं; और पहली बातें स्मरण न की जाएंगी अथवा सोच-विचार में भी न आएंगी।

यशायाह 66:22 जैसे नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूं, मेरे सम्मुख बने रहेंगे, वैसे ही तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम बना रहेगा," यहोवा की यही वाणी है।

2 पतरस 3:13 पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार (उसकी इच्छा) हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी।

आदम हमारे जीवन बहुत सारे दर्द और दुखों को लेकर आया।

- याद रखें : हमारी इच्छा के कार्य न सिर्फ हमारे जीवन में दर्द और दुःख लेकर आएँगे बल्कि दूसरों के जीवनों में भी, विशेषकर हमारे बच्चों और पीढ़ियों में।

- लेकिन यह वायदा पूरी तरह से कायम है: मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा। फिलिप्पियों 1:6

- परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8) और प्रेम कभी टलता नहीं (1 कुरि. 13:8)

यीशु मसीह का यह कथन बहुत स्पष्ट रीति से इस बात को बताता है :

यूहन्ना 6:37-39 जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा। [38] क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ; [39] और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ।

यूहन्ना 17:4 जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है ... [6] "मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया है जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया। वे तेरे थे और तु ने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है। [8] क्योंकि जो वचन तू ने मुझे दिये, मैं ने उन्हें उनको पहुँचा दिये; और उन्होंने उनको ग्रहण किया, और सच सच जान लिया है कि मैं तेरी ओर से आया हूँ, और विश्वास कर लिया है कि तू ही ने मुझे भेजा। [9] मैं उनके लिये विनती करता हूँ; संसार के लिये विनती नहीं करता परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं;

मुझे यकीन है कि ये कथन सत्य हैं और जब सब हो जाएगा तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर को **पश्चाताप** या **पछतावा नहीं होगा** क्योंकि उसकी इच्छा, उसकी मनोकामना, उसके उद्देश्य को प्राप्त नहीं किया गया। वे **सब** जिनसे वह प्रेम रखता है, उसके बच्चे और वे सब जिन्हें उसने स्वर्ग में होने के लिए चुना है, **स्वर्ग में उसके साथ होंगे।** (पढ़ें रोमियों 9:6-24)

बीते हुए अनंतता में उसने मसीह यीशु में हमें उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया (इफिसियों 2:4-10) **वहाँ खाली कुर्सियाँ नहीं होंगी**।

क्योंकि परमेश्वर कहता है : मैं अन्त की बात आदि से और जो बातें अब तक नहीं हुईं उन्हें प्राचीनकाल से बताता आया हूं। मैं कहता हूं कि मेरी योजना स्थिर रहेगी और मैं अपनी भली इच्छा पूरी करूंगा। यशायाह 46:10

इसी विचार पर आगे बढ़ते हुए :

इफिसियों 1:5 और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों

इफिसियों 1:11 उसी में जो अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार सब कुछ करता है, हमने भी उसके अभिप्राय के अनुसार, पहिले से ठहराए जाकर, उत्तराधिकार प्राप्त किया है,

फिलिप्पियों 1:6 मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।

बाइबल यह स्पष्ट रीति से बताती है कि परमेश्वर ने सब लोगों में अच्छा काम पूरा नहीं किया। सभी "*उसके अभिप्राय के अनुसार, पहिले से ठहराए गए नहीं हैं कि उसकी इच्छा की सुमति के अनुसार उत्तराधिकार प्राप्त करें।*"

उदाहरण के लिए :

मत्ती 13:10-11 चेलों ने पास आकर उससे कहा, "तू लोगों से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है?" 11 उस ने उत्तर दिया, "तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं।

- वह दृष्टान्तों में कह रहा था ताकि वे न समझ पाएं।

पद 15 पर जारी : क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊँचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आँखें मूंद ली हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएँ, और मैं उन्हें चंगा करूँ।'

- निश्चय ही परमेश्वर अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार और अपने भले अभिप्राय से उनमें कार्य नहीं कर रहा है। यदि वे सुनें और उस पर विश्वास करें तो वह "उनकी अपनी इच्छा" का कार्य होगा। (मत्ती 7:22-23 अपनी स्वयं की इच्छा का एक उदाहरण है)

जंगली बीज (मत्ती 13) और "विवाह भोज" के दृष्टांत भी यही बताते हैं :
मत्ती 22:9-14 इसलिये चौराहों पर जाओ और जितने लोग तुम्हें मिलें, सबको विवाह के भोज में बुला लाओ।' [10] अतः उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे क्या भले, जितने मिले, सबको इकट्ठा किया; और विवाह का घर अतिथियों से भर गया। [11] "जब राजा अतिथियों को देखने भीतर आया, तो उसने वहाँ एक मनुष्य को देखा, जो विवाह का वस्त्र नहीं पहने था।

- यहाँ एक ऐसे मनुष्य के बारे में लिखा है जो अपनी इच्छा के अनुसार भीतर आया। निश्चय ही परमेश्वर अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार और अपने भले अभिप्राय से उनमें कार्य नहीं कर रहा है। (देखें यशायाह 61:10 और प्रकाशितवाक्य 19:7)

[12] उसने उससे पूछा, 'हे मित्र; तू विवाह का वस्त्र पहने बिना यहाँ क्यों आ गया?' उसका मुँह बंद हो गया। [13] तब राजा ने सेवकों से कहा, 'इसके हाथ-पाव बाँधकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।' [14] क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।"

- बुलाए हुए तो बहुत हैं - "बुलावा" सब के लिए है। हमें हर एक को सुसमाचार बताना है क्योंकि हम नहीं जानते कि कौन चुना है और कौन नहीं।

- परन्तु चुने हुए थोड़े हैं - (εκλεκτός (एक - लेक - टॉस) : चुने हुए; विशिष्ट; अभिप्राय से, पसंदीदा)। और वे जो चुने हुए है, उन्हीं में परमेश्वर अपनी इच्छा की सुमति और अपने भले अभिप्राय के अनुसार कार्य करता है, उन्हें उसने उद्धार के वस्त्र पहनाए हैं, उसने धार्मिकता के वस्त्र से संवारा है (यशायाह 61:10) और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। उसको शुद्ध और

चमकदार महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया" -क्योंकि उस महीन मलमल अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है। (प्रकाशितवाक्य 19:7-8)

- परन्तु यदि चुने हुए नहीं हैं तथा उद्धार और धार्मिकता के वस्त्र पहने नहीं हैं तो स्वर्ग के विवाह भोज में न तो हमें प्रवेश है और न ही कोई स्थान है।

मत्ती 11:26-27 हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। [27] ... और **कोई पुत्र को नहीं जानता** केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र; और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।

["लेपलाकपन" और "ऊपर से जन्मे" के नोट्स भी देखें]

कुछ ऐसे पद भी हैं जिन्हें देखकर लगता है कि वे इस बात से सहमत नहीं हैं।

यूहन्ना 3:16-19 "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। [17] परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। [18] जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा"। शब्द "जगत" में सब कुछ सम्मिलित है। यह उसकी रचना थी। परन्तु उसने इस संसार और इसमें रहनेवाले सब प्राणियों के साथ जो कुछ हुआ, उससे प्रेम नहीं रखा। उदाहरण के लिए उसने पाप, मृत्यु और जैसा लिखा है, "मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना" (रोमियों 9:13), अत: कुछ लोगों से प्रेम नहीं किया।

परन्तु परमेश्वर ने जगत के लोगों के पापों को क्षमा कर दिया।

2 कुरिन्थियों 5:18-19 ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, और मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। 19 अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उस ने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।

पाप, आदम के पाप का मूल्य यीशु के लहू के द्वारा चुका दिया गया, उसको क्षमा कर दिया और भुला दिया गया। अनंत जीवन के लिए अब पाप एक समस्या नहीं है। **विषय है सच्चा विश्वास** कि यीशु कौन है और उसने क्या किया है, और जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो।

और यह सच्चा विश्वास केवल उन्हीं लोगों के पास आता है "उस ने जगत की उत्पत्ति से पहिले चुन लिया" (इफिसियों 1:4); जिन्हें "अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार पहिले से ठहराया"; जिनमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है (पद 11) (विश्वास पर पूरा अध्ययन करने के लिए कृपया मेरे नोट्स "विश्वास" देखें)

कुछ पद ऐसे भी हैं जिन्हें देखकर लगता है कि "परमेश्वर की इच्छा" कभी पूरी नहीं होगी।

ऐसा ही एक पद यह है :

2 पतरस 3:7-9 पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे हैं, कि जलाए जाएं; और वह भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे। 8 हे प्रियों, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं। 9 प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे (प्रियों के) विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई (प्रियों में से) नाश हो; वरन यह कि सब को (प्रिय लोगों को) मन फिराव का अवसर मिले।

- पतरस ने यह पत्री विश्वासियों को लिखा है : 2 पतरस 1:1 उन लोगों के नाम जिन्हों ने ... हमारा सा बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है (जैसा पतरस का था) ... (3) जिस ने हमें ... बुलाया है।

- वह प्रिय लोगों से बात करता है और कहता है कि प्रभु तुम्हारे विषय में धीरज धरता है (अक्षरशः हमारे विषय में सहता है) और नहीं चाहता, कि कोई (हम जो उसके प्रियों में से हैं) नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।

  किसी भी पद का सही अर्थ समझने के लिए उसका सन्दर्भ बहुत महत्वपूर्ण है।

इफिसियों 1:11 उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है ...

यशायाह 46:10 मैं अन्त की बात आदि से और जो बातें अब तक नहीं हुईं उन्हें प्राचीनकाल से बताता आया हूं। मैं कहता हूं कि मेरी योजना स्थिर रहेगी और मैं अपनी भली इच्छा पूरी करूंगा।

यशायाह 55:11 ऐसे ही जो शब्द मेरे मुंह से निकलता है, वह मेरे पास खाली नहीं लौटेगा; परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा; जिसके लिए मैंने उसको भेजा था, वह उसको सफल करेगा।

मैं इस एक बात का निश्चय है : सब, हर एक जिनसे वह प्रेम करता है, जिन्हें उसने चुना और पहले से ही ठहराया है, वे उसके साथ स्वर्ग में होंगे।

यहाँ एक और पद है जो इसके विरोधाभास प्रतीत होता है :
1 तीमुथियुस 2:1-6 अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूं, कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएं। [2] राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। [3] यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। [4] वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहिचान लें। [5] क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। [6] जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया

- सन्दर्भ के अनुसार, "सब" सीमित नहीं है, इसमें सब शामिल हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि सभी बचाए जाएँगे, बल्कि यह कि उसकी यह केवल "इच्छा" है। बार्नेस के नोट्स के अनुसार :
  "यह उसके स्वभाव, उसकी भावनाओं और उसकी इच्छा के अनुरूप है। दूसरे पदों में चाहता का अनुवाद "इच्छा" किया गया है। इसे यहाँ पूर्ण अभिप्राय के साथ नहीं लिया जा सकता था, क्योंकि फिर यह एक आज्ञा के रूप में हो जाता जैसे सृष्टि की रचना के समय **उसकी इच्छा** थी, और फिर **उसका होना निश्चित हो जाता।** यह शब्द अकसर चाहत, इच्छा को प्रकट करने के लिए इस्तेमाल हुआ है। परमेश्वर का अभिप्राय इस विषय पर ऐसी इच्छा नहीं है कि वह अपने पूरे बल का प्रयोग करके इसे प्राप्त करे।"

  नए नियम में जिन स्थानों पर यह शब्द इच्छा या चाहने के रूप में आता है : मत्ती 15:28; यूहन्ना 16:19; लूका 8:20; 23:8; गलातियों 4:20; 1 कुरि 7:7; 11:3; 14:5

  पौलुस जो कहना चाह रहा है वह समझने में ये पद सहायता करेंगे:

1 तीमुथियुस 4:10 क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं, कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है; जो सब मनुष्यों का, और निज करके (विशेष रूप से) विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।

- पौलुस यहाँ कह रहा है कि वह सब मनुष्यों का ... उद्धारकर्ता है, क्योंकि और कोई उद्धारकर्ता नहीं है। कोई भी नहीं, कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और

मनुष्यों के बीच में भी एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। 6 जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया (1 तीमुथियुस 2:5-6)

- परन्तु यह स्पष्ट है कि **सब** बचाए नहीं जाएँगे। **केवल** वही **जो विश्वास करते** हैं। केवल वही जिन्हें उसने **चुना है**। क्योंकि यदि वह कुछ को नहीं चुनेगा तो कोई भी नहीं होगा।

क्योंकि :
भजन संहिता 14:2-3 परमेश्वर ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की है, कि देखे कि कोई बुद्धिमान, कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं। [3] वे सब के सब भटक गए, वे सब भ्रष्ट हो गए; कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं।

रोमियों 3:10-12 जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। [11] कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। [12] सब भटक गए हैं ...

परन्तु जिन्हें उसने चुना है, जिन्हें उसने निर्धारित किया है, **वह उनके लिए ऐसा करेगा** : क्योंकि परमेश्वर अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों को करने का प्रभाव डालता है।

जैसे शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। 17 यीशु ने उस को उत्तर दिया, "हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। मत्ती 16:16-18

- सच पहचानने के लिए - यीशु को -परमेश्वर की सुइच्छा निमित्त आपके मन में इच्छा और काम करने का प्रभाव डालने के लिए, परमेश्वर के प्रकाशन की आवश्यकता थी।
कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उस को अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा। यूहन्ना 6:44

हमारी प्रार्थनाओं और हमारे प्रचार में **सब शामिल होने चाहिए** क्योंकि हम नहीं जानते कि कौन प्रभु का है और कौन नहीं।

- इब्रानियों 4:2 क्योंकि हमें उन्हीं के समान सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि वह सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा।

क्यों नहीं ? क्यों कुछ के पास तो विश्वास है और कुछ के पास नहीं?

विश्वास करने का विश्वास परमेश्वर की ओर से दान है।

यूहन्ना 6:64-65 परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं **जो विश्वास नहीं करते** : क्योंकि यीशु तो पहले ही से जानता था कि **जो विश्वास नहीं करते**, वे कौन हैं? ... [65] और उस ने कहा, इसी लिये मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर **यह वरदान न दिया जाए** तक तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।

यूहन्ना 6:37 जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा

2 पतरस 1:1 शमौन पतरस की और से ... **उन लोगों के नाम जिन्हों ने** ...हमारा सा **बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है।**

भजन संहिता 33:15 वही जो उन सभों के हृदयों को गढ़ता

रोमियों 10:10 क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है

याकूब 1:18 उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया

1 पतरस 1:3 परमेश्वर ने ... अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।

1 पतरस 1:21 जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो

फिलिप्पियों 1:29 क्योंकि मसीह के कारण **तुम पर यह अनुग्रह हुआ** कि न केवल उस पर **विश्वास करो** पर उसके लिये दुख भी उठाओ।

रोमियों 12:3 ...**परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बांट दिया है**

रोमियों 10:17 सो **विश्वास सुनने** से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।

> यूहन्ना 8:47 जो परमेश्वर से (ἐκ) है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से (ἐκ) नहीं हो।
>
> > NT:1537 ἐκ (ऐक) एक मुख्य पूर्वसर्ग है जो उस बिंदु की ओर संकेत करता है जहाँ से क्रिया या गति का आरम्भ हुआ था, से या में से
>
> यूहन्ना 10:26-27 **परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।** (27) **मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं**, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।

लूका 8:10 **तुम को** परमेश्वर के राज्य के भेदों की **समझ दी गई है**, **पर औरों को** दृष्टान्तों में सुनाया जाता है, इसलिये कि वे देखते हुए भी **न देखें**, और **सुनते हुए भी न समझें।**

इब्रानियों 12:2 ... **विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले** यीशु

कर्त्ता - यूनानी में : **आरम्भ करना**, अगुवाई करना या ले जाना
विश्वास का आरम्भ, उसकी उत्पत्ति और उसकी सिद्धता परमेश्वर द्वारा होती है

सिद्ध करनेवाले - परमेश्वर से प्राप्त निरंतर और चिरस्थाई विश्वास
लूका 22:32 मैं ने तेरे लिये विनती की, कि **तेरा विश्वास जाता न रहे**

इब्रानियों 7:25 इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का **पूरा पूरा उद्धार** कर सकता है, क्योंकि वह उन के लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।।

2 तीमुथियुस 2:19 तौभी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।

परमेश्वर प्रेम है - प्रेम कभी टलता नहीं। उसकी इच्छा आख़िरकार पूरी होगी

इब्रानियों 13:20-21 अब शान्तिदाता परमेश्वर ... [21] तुम्हें हर एक भली बात में **सिद्ध करे**, जिस से तुम **उस की इच्छा पूरी करो**, और **जो कुछ उस को भाता है**, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे, जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।।

फिलिप्पियों 1:6 और मुझे इस बात का भरोसा है, कि **जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही** उसे यीशु मसीह के दिन तक **पूरा करेगा।**

1 थिस्सलुनिकियों 5:24 तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।।

यशायाह 14:24 सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, "नि:सन्देह **जैसा मैं ने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी**

भजन संहिता 33:8-12 **यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी**, उसके मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी।

हाँ और आमीन!

जैसी उसने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होंगी।।